एक परजीवी विलुप्ति की कगार पर

निद्रा रोग उत्पन्न करने वाला परजीवी संभवतः विलुप्त होने की कगार पर है और कारण यह है कि इसने पिछले 10,000 वर्षों में लैंगिक प्रजनन नहीं किया है।

अफ्रीकी निद्रा रोग प्रति वर्ष हज़ारों लोगों को प्रभावित करता है। यह रोग एक परजीवी *ट्रिपेनोसोमा ब्रुसाई गैम्बिएन्स* के कारण होता है। यह परजीवी मानव शरीर में एक मक्खी के काटने से पहुंचता है। इस रोग में शुरू में तो बुखार आता है और बदन दर्द होता है मगर आगे चलकर शारीरिक तालमेल में कमी आ जाती है, मानसिक भ्रम पैदा होने लगते हैं, शरीर सुन्न पड़ जाता है और, रोग के नाम के विपरीत, नींद नहीं आती। इलाज न किया जाए तो धीरे-धीरे अंग काम करना बंद कर देते हैं और मरीज़ की मृत्यु हो जाती है।

अच्छी बात यह है कि इस बीमारी का काफी कारगर इलाज उपलब्ध है। हां, इतना ज़रूर है कि इलाज लंबा चलता है और साइड प्रभाव भी होते हैं मगर व्यक्ति ठीक हो जाता है। उससे भी अच्छी बात है कि इस इलाज का असर समय के साथ कम नहीं हो रहा है। कारण यह है कि बैक्टीरिया और वायरस के समान यह परजीवी तेज़ी से बदलता नहीं है। दरअसल शोध पत्रिका *eLife* में प्रकाशित हाल के एक शोध पत्र के मुताबिक यह परजीवी पिछले 10,000 सालों से ऐसा का ऐसा बना हुआ है।

इसके न बदलने का कारण यह बताया गया है कि पिछली इतनी सहस्राब्दियों में इसने लैंगिक प्रजनन नहीं किया है। इसकी सारी संतानें क्लोन होती हैं। यानी 10,000 साल पहले किसी वजह से अस्तित्व में आने के बाद जितने भी परजीवी *ट्रिपेनोसोमा ब्रुसाई गैम्बिएन्स* पैदा हुए हैं वे सब एक-दूसरे के क्लोन हैं और हूबहू एक जैसे हैं।

वैसे आज भी इस परजीवी में उत्परिवर्तन होते हैं मगर शोधकर्ताओं का कहना है कि इन उत्परिवर्तनों की कारगर ढंग से मरम्मत कर दी जाती है। मगर दिक्कत यह है कि जब किसी जीव में उत्परिवर्तनों की मरम्मत की इतनी कारगर व्यवस्था होती है तो उसका विकास रुक जाता है। इस शोध के मुखिया ग्लासगो विश्वविद्यालय के विली वेयर का कहना है कि ऐसे रुके हुए जीवों का विलुप्त होना अवश्यंभावी है। उनका तो कहना है कि परजीवी का एक रूप जो कोट डी आइवरी और बुर्किना फासो में देखा गया था वह शायद विलुप्त हो भी चुका है क्योंकि 1990 के बाद से इसे फिर नहीं देखा गया है।

शोधकर्ताओं के मुताबिक यह कोई अनहोनी बात नहीं है। यही स्थिति नारू यानी गिनीवर्म (*ड्रेकनकुलस मेडिनेन्सिस*) और गायों में होने वाले रोग रिंडरपेस्ट परजीवी के साथ भी हो रही है या हो चुकी है। जहां रिंडरपेस्ट को 2011 में विलुप्त घोषित किया जा चुका है, वहीं गिनीवर्म भी इसी कगार पर है। ***(स्रोत फीचर्स)***